

मुखिया, या प्रधान 3. अध्यक्ष, मुख्य निर्देशक, मुख्य 4. मूलधन (प्रिंसिपल कैपीटल या एमाउंट) मूलराशि 5. वाक्य के मुख्य खंड के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द। principal

**प्रकंद** पुं. (तत्.) वृक्ष के भूमिगत तने या जड़ें।

**प्रकंप** पुं. (तत्.) अत्यधिक काँपना, हिलना, थरथराहट।

**प्रकंपन** वि. (तत्.) काँपाने वाला, हिलनेवाला पुं. 1.

हवा 2. आँधी 3. जोर से हिलने की क्रिया 4. एक नरक।

**प्रकंपित** वि. (तत्.) 1. ऐसा पात्र जिसमें अनेक संघटक हिलाकर मिश्रण किए जाते हैं 2. थरथराता हुआ, बहुत काँपता हुआ।

**प्रकंपी** वि. (तत्.) हिलने वाला, काँपने वाला।

**प्रकट** पुं. (तत्.) राशि, समूह, ढेर वि. (सं.) 1. जो प्रत्यक्ष हो, व्यक्त, स्पष्ट 2. जो गुप्त न हो 3. जो सहजरूप में देखा जा सके 4. प्रादुर्भूत।

**प्रकट** कोटि पुं. (तत्.) जो प्रत्यक्ष हो सके वह विधि।

**प्रकटन** पुं. (तत्.) 1. प्रकट होना, प्रत्यक्ष होना, 2. नाट्य में धीरे धीरे प्रकट होना।

**प्रकट प्रमाण** पुं. (तत्.) 1. प्रकट मत 2. प्रकट साक्ष्य, स्पष्ट, साक्ष्य 3. सर्वसमक्ष प्रमाण।

**प्रकटित** वि. (सं.) प्रत्यक्ष किया गया, सर्वसाधारण जनता के समक्ष रखा गया, साफ।

**प्रकटीकरण** पुं. (तत्.) प्रकट प्रत्यक्ष होना, प्रकट करना, प्रकटन।

**प्रकथन** पुं. (तत्.) विशेष रूप से कथन।

**प्रकरण** पुं. (तत्.) 1. लेख चर्चा, वाद विवाद का विषय प्रसंग 2. ग्रंथ के किसी अध्याय के छोटे-छोटे भाग या परिच्छेद 3. रूपक 10 भेदों में से एक जिसमें कथावस्तु उत्पाद्य अर्थात् जो लौकिक या कल्पित होती है, प्रख्यात नहीं 4. वे ग्रंथ मीमांसा के सिद्धांतों को स्मृति ग्रन्थों की क्रियाओं पर लागू करते हैं, प्रकरणग्रन्थ कहे जाते हैं।

**प्रकरणिका/प्रकरणी** स्त्री. (तत्.) संस्कृत नाट्य शास्त्र में छोटे आकार के प्रकरण नाटक को प्रकरणिका/प्रकरणी कहा जाता है।

**प्रकरी** स्त्री. (तत्.) (काव्य-नाट्य) 1. प्रबंध काव्य या नाटक में छोटी प्रामाणिक कथा (या कथाएं) जो बीच में मुख्य कथा की सहायता करके समाप्त हो जाती हैं जैसे- जयशंकर प्रसाद के चन्द्रगुप्त नाटक में चन्द्रगुप्त और दाण्डायन के मिलन की कथा को प्रकरी कहते हैं, प्रासंगिक कथावस्तु 2. आंगन 3. चौराहा 4. एक तरह का गान।

**प्रकर्ष** पुं. (तत्.) उत्कर्ष, उत्तमता बल, अधिकता, विस्तार, विशेषता खींचने की क्रिया, घटनाओं, भावों आदि का पराकाष्ठा तक क्रमिक उत्थान।

**प्रकर्षक** पुं. (तत्.) 1. खींचने वाला, प्रकर्ष करने वाला, कामदेव।

**प्रकर्षण** पुं. (तत्.) 1. प्रकर्ष, उत्कर्ष 2. अधिकता 3. खींचने की क्रिया 4. जोतने की क्रिया।

**प्रकर्षित** वि. (तत्.) खींचा हुआ, ताना हुआ।

**प्रकर्षी** वि. (तत्.) 1. प्रकर्ष युक्त 2. उत्कृष्ट, श्रेष्ठ 3. चलाने वाला 4. नेतृत्व करने वाला।

**प्रकल्प** पु. (तत्.) जिसके संबंध में प्रकल्पना हो या होने वाली हो।

**प्रकल्पना** स्त्री. (तत्.) निश्चित, स्थिर करने की क्रिया, भाव ऐसी बात जिसे मान लिया गया हो, अनुमान।

**प्रकल्पित** वि. (तत्.) (प्रकल्प+इत) 1. जिसकी प्रकल्पना की गयी हो 2. निश्चित या नियत किया गया हो 3. रचित 4. स्थिर किया हुआ।

**प्रकल्पित वेतन** पुं. (तत्.) नियत किया गया वेतन।

**प्रकांड (प्रकाण्ड)** पुं. (तत्.) 1. वृक्ष का तना, स्कन्ध 2. शाखा डाली 3. भुजा का ऊपरी भाग वि. विशाल, सर्वश्रेष्ठ उत्तम।

**प्रकाम** पुं. (तत्.) (प्र+काम) 1. अभिलाषा, कामना इच्छा 2. तृप्ति 3. संतोष वि. यथेष्ट, पर्याप्त।

**प्रकार** पुं. (तत्.) 1. रीति, भाँति, ढंग, तरीका 2. सादृश्य, समानता जैसे- जेहि प्रकार मोहि वरै कुमारी 2. किसी स्थान, भवन आदि की चारों ओर की दीवार चार दीवारी 3. उपाय।

**प्रकारता** स्त्री. (तत्.) जिसमें प्रकार का भाव हो, अर्थात् विशिष्टता, वृत्ति।